ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 204-206

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

कविताएं : एक अंतहीन दस्तक

डॉ0 रुकैया शाहीन

सहायक प्रवक्ता– संस्थान–माइकल मधुसूदन मेमोरियल कॉलेज, दुर्गापुर (पश्चिम बंगाल) भारत

Received-06.02.2023, Revised-12.02.2023, Accepted-17.02.2023 E-mail: saheenrukaiya@gmail.com

सारांश: *कवि उदय प्रताप सिंह के शब्दों में कहूं तो– "यह न समझो गीत लिखने की लत पड़ गई है, या विरह में गुनगुनाने की ही आदत पड़ गई है/मैं लिखूं या गुनगुनाउं तो यह समझो देश को कवि की जरुरत पड़ गई है" जी हाँ समाज और देश को कविता की बेहद जरुरत है क्योंकि इसके बगैर मानव ह्रदय शून्य में तबदील हो जाएगा जहाँ कोई भी भाव नहीं पनप पायेंगे। आ.शुक्ल 'कविता क्या है' शीर्षक निबंध में लिखते हुए कहते हैं कि"ज्यों ज्यों हमारी वृतियों पर सभ्यता के नए–नए आवरण चढते जाएंगे, त्यों–त्यों कविता की आवश्यकता बढ़ती जाएगी और कवि–कर्म कठिन होता जाएगा'। भारत ही नहीं पाश्चात्य जगत में भी कविता को नए–नए ढ़ंग से परिभाषित किया गया, जिसका निचोड़ एक ही अर्थ से है कि कविता ह्रदय की वाणी है।*

कुंजीभूत शब्द– ह्रदय शून्य, तबदील, शीर्षक निबंध, वृतियों, सभ्यता, आवरण, कर्म कठिन, कविता, आशा–आकांक्षा।

दार्शनिक सुकरात इसे दैवी–प्रेरणा से प्रेरित ईश्वर का संदेश मानते हैं। उनका कहना हि कि ईश्वर जब हमसे बातचीत करना चाहते हैं, तो कवियों की वाणी के माध्यम अपने शब्दों को व्यक्त कर देते हैं। वस्तुतः भावनाओं को अभिव्यक्त और आंदोलित करने की जैसी शक्ति कविता में है,वह साहित्य के किसी अन्य विधा में नहीं मिलती। समूचे साहित्य जगत की यदि बात करें तो कविता की यह खास विशेषता रही है कि यह अपने समय और समाज के बहुआयामी यथार्थ से निरन्तर जुड़ने और जूझने का प्रयास करती रही है। जिंदगी की धड़कनों, जनता के संघर्षों, उसके सुख–दुख, आशा–आकांक्षा, हताशा–निराशा का चित्रण बदलते दौर की कविताओं में विविध रुपों में मिलता है।

हिंदी साहित्य के विकास परंपरा की बात करें, तो कविता लागातार सामाज के धड़कनों को महसूस करती समय के साथ बदलते नए मूल्यबोध को उजागर करती दिखाई पड़ती है। हिंदी साहित्य का आधुनिक काल पश्चिमी जीवन शैली तथा वैज्ञानिक सोच की आधुनिकता से प्रारंभ होता है। विदेशी भौतिकवादी चिंतन और भारतीय अध्यात्मवादी मनन की टकराहट से नई उर्जा उत्पन्न हो रही थी। अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव से मचलता युवा मन भारत के अतीत की खोज की ओर उन्मुख होता है और समकालीन दौर की प्रासंगिकता की स्थापना का सिलसिला शुरु होता है। नवजागरण की चेतना से स्फूर्त समाज एक नई करवट लेने लगा था। दासता से व्यथित जनमन का विरोधी स्वर कविता के माध्यम से मुखरित होने लगे थे। भारतेंदु की व्यंग्यपूर्ण टिप्पणी इसका सुंदर उदाहरण हैं– भीतर–भीतर सब रस चूसै हंसि–हंसि के तन मन धन मूसे जाहिर बातन में अति तेज क्यों सखि साजन, नहिं अंग्रेज। चूंकि भारतेंदु का युग साहित्यिक संक्रमण का युग था अतः यहाँ प्राचीन परम्पराओं के प्रति मोह और नवीन विचारधाराओं के प्रति ललक भी दिखाई देती है। इस युग के अधिकांश कवियों में मुक्ति की छटपटाहट के स्वर ध्वनित होते हैं वह मुक्ति चाहे औपनिवेशिक दासता से हो, चाहे वर्ण–व्यवस्था, किसान, अकाल या टैक्स संबंधी मुद्दों से हों या स्त्री मुक्ति के प्रश्न हो, कविताएं हर प्रश्नों को उजागर करती तटस्थ भाव से गूंजती और सुनाई देती जान पड़ती हैं। अतः यही कारण है कि भारतेंदुयुगीन साहित्यकार कवि होने के साथ साथ समाज–सुधारक और प्रचारक भी रहें।

खड़ी बोली के खरेपन के साथ द्विवेदीयुगीन कवि भी अपनी कविताओं में राष्ट्र–प्रेम और समाज के ज्वलंत पहलुओं को प्रस्तुत करते दिखाई देते हैं प्रियप्रवास, भारत–भारती, साकेत और यशोधरा आदि में चित्रित पात्र समाज का नेतृत्व करते हैं। छायावाद युग तक आते–आते कविता में उद्घाटित राष्ट्र–प्रेम अध्यात्म और रहस्यवाद से होता हुआ प्रकृति–प्रेम में और भी सघन और घनीभूत हो जाता है। पूंजीवाद के कारण छायावाद में कहीं कहीं व्यक्तिनिष्ठता तो है परंतु उसका स्वरुप अध्यात्मिक है तभी तो कहीं कामायनी और यामा जैसी रचनाएं जन्म लेती हैं तो कहीं भूखमरी बेरोजगारी, गरीबी और पीड़ा को दर्शाता भिक्षुक मुंह फटी झोली लटकाए दर दर भटकता दिखाई देता है तो कहीं गुरु हतौड़ा हाथ में लिए तोड़ती पत्थर कविता की स्त्री समाज की भयावह सच्चाई को उकेर जाती है।

प्रगतिवादी कवि समाज के नवनिर्माण की प्रेरणा देते हैं और उस सामाजिक व्यवस्था को खत्म करना चाहते हैं जिसकी नींव शोषण पर टीकी है घ्तभी तो वे कहते हैं "हो यह समाज के चिथड़े–चिथड़े शोषण पर जिसकी नींव पड़ी"। नागार्जुन सत्ता, व्यवस्था एवं पूंजीवाद के प्रति आक्रोश व्यक्त करने में निरंतर अग्रणी रहे हैं उनकी कविताओं में आजादी के बाद के भारत की यथार्थ तस्वीर मुखर होती है– "देश हमारा भूखा नंगा घायल है बेकारी है मिले न रोटी–रोजी भटके दर–दर भिखारी से"। अज्ञेय कविता जगत में नए–नए प्रयोगों के साथ पदार्पण करते हैं मनोवैज्ञानिक विचारधाराओं के नवनिर्मित रुपों का गठन होना प्रारंभ होता है। अज्ञेय और त्रिलोचन हिंदी कविता के दो धूरी हैं यहाँ से हिंदी कविता दो भिन्न दिशाओं की

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

ओर मुड़ जाती है। अज्ञेय के चरम व्यक्तिवाद का दिग्दर्शन 'नदी के द्वीप' में होता है, तो त्रिलोचन जीवन की खोज में 'नगई महरा' के पास पहुंच जाते हैं। इसी प्रकार 'परशुराम की प्रतीक्षा' में विश्वबंधुत्व और मानवता की रक्षादि भाव को तलाशते दिनकर का आक्रोश फूट पड़ता है और वे कहते नहीं चूकते–

"नेता निमग्न दिन रात शांति चिंतन में
कवि कलाकार ऊपर उड़ रहे गगन में
यज्ञाग्नि हिन्द में समाधि नहीं पाती है
पौरुष की ज्वाला रोज बुझी जाती है"।[1]

नई कविता के माध्यम से कविता पुनः नई चाल में ढ़ली। रुढ़िवादिता की प्रतिक्रियादृस्वरुप इसका उदय होता है जिसमें शोक, निराशा मोहभंग की स्थिति जन्म लेती है धूमिल के शब्दों में– जब मैं उसे भूख और नफरत और प्यार और जिंदगी, का मतलब बतलाता हूं और मुझे कविता में आसानी होती है तब मैं ठहरे हुए को हरकत में लाता हूं ।

समकालीन कविता आज अपने युग और परिवेश से संपृक्त है। इस कविता में हम अपने वर्तमान को देख सकते हैं यहॉ प्रगतिशील और जनवादी कवियों का संघर्ष बहुआयामी है। समकालीन कवि जहॉ पारंपरिक सौंदर्यबोध को चुनौती देता है वहीं कविता का नया सौंदर्यबोध भी रचता है। वह अभिजात्यों में सौंदर्य न देखकर किसान. मजदूर के जीवन संघर्ष में सौंदर्य देखता है। कविता आज मोहभंग की स्थिति को दर्शाती है आजादी के बाद भी भारतीय समाज आजाद नहीं हुआ आज भी लोगों को लगता है कि वे ठगे हुए से हैं। बेरोजगारी, भूखमरी, अशिक्षा, स्त्री दृसुरक्षा, अस्मिता की पहचान, दलित, आदिवासी प्रश्नों की खीझ, आक्रोश कुठा–निराशा, असंतोष से समाज हर पल जूझ रहा है जिसकी अनुगूंज आज भी कविता के माध्यम से गूंज रही है और समाज के दर्द भरी सच्चाई से रुबरु करा रहीं हैं महादेव टोपू के शब्दों में कहूं तो– "वह धनुष उठाएगा जंगल के हरेपन की खातिर जंगल का कवि मादर बजाएगा, बंशी बजाएगा चढ़ा कर प्रत्यंचा पर कलम."[2]

समकालीन आदिवासी युवा कवि अनुज लुगुन समाज में पनप रहे दो विपरीत विचारधाराओं को बड़ी ही संवेदनशीलता से महसूस करते हुए आदिवासी विस्थापन के दर्द को बिल्कुल ही नये अंदाज में परिभाषित करते हैं और कहते हैं कि–

"जंगल पहाड़ी के इस ओर है और
बाघ पहाड़ी के उस पार
पहाड़ी के उस पार राजधानी है,
उसने अपने नाखून बढ़ा लिए हैं,उसकी ऑखें
पहले से ज्यादा लाल और प्यासी हैं, वह एक साथ है
कई गॉवों में ह्मला कर सकता है,
उसके ह्मलों ने
समूची पृथ्वी को दो हिस्सों में बॉट दिया है"।[3]

स्त्री लेखन में भी कविता के बीज–स्वर स्त्री मुक्ति, महिला सशक्तिकरण, वूमन पावर, लैंगिक भेद भाव, नव–उदारवाद को लेकर अग्रसर दिखाई देते हैं। अनामिका के शब्दों में– "सचमुच यह बड़ी रोचक घटना घटी है इधर के उत्तर–स्त्रीवादी दौर में की जो भी क्षेत्र अनुर्वर और उजड़ा हुआ बगीचा मानकर पुरुष छोड़ चले हैं दृस्त्रियाँ उनमें नई हरियाली भर रही हैं। कविता का क्षेत्र, पूरे साहित्य की भूमि, स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय के शिक्षण असाइनमेंट गजब तौर पर इन क्षेत्रों का स्त्रीकरण हुआ है और स्त्रियाँ इनमें नए रंग, नए तेवर भर भी रही हैं"।[4]

स्त्री लेखन में संघर्ष– चेतना और अस्मिता के दो धरातल देखे जा सकते हैं, जहां उनके भाषा के तेवर में भी बदलाव परिलक्षित होते है।

अनामिका कहती हैं–
'रोज निकाला जाता है मुझको
रोज केंचुए की तरह
गुड़ी–गुड़ी ही फैल जाती हूँ फिर से
वे कहते हैं और कहते हैं ठीक
अपनी औकात जाननी चाहिए
पैर उतने पसारिए
जितनी लंबी सौर हो !
और सौर के भीतर

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

गुड़ी–मुड़ी होकर
जो सोया हो कोई सौरमण्डल ?[5]

वर्तमान समय में कविता के विषय लगातार बदल रहे हैं, जिनके अनुरूप कवि भी नए बिंबों की तलाश कर लेते हैं। इधर कुछ वर्षों से नए कवियों की कविताओं में जिजीविषा और आत्मविश्वास के स्वर सुनाई पड़ रहे हैं। इन्हीं में से एक नाम ऋषिकेश राय का है जिनकी कविताओं में समाज के मेहनतकश लोग जैसे की रिक्शेवाला, अखबार वाला, सड़क बुहारने वाले या सामान ढोने वालों के दर्द के साथ साथ बेटियाँ नामक कविता में स्त्री दर्द को भी महसूसा गया है, वे कहते हैं–

'बेटियाँ नहीं होती बरगद छतनार
बेटियाँ दूब सी
अपनी नोकों पर उठा लेती हैं शिलाखंड
बेटियाँ स्मृति की धुंधुआती कोटर में
मिट्टी का दिया रख जाती हैं
बेटियाँ गिरती रहती हैं , हमारे अंदर
बर्फ सी चुपचाप'।[6]

अंततः कविता आज भी अपनी अनुभूतियों को बयां करने का एक बेहद ही बेहतरीन तरीका है, जिससे समाज का हर भावुक वर्ग चाहे वह बूढ़ा हो या बच्चा, प्रौढ़ हो या जवान मन में संवेदना का कंपन जरूर महसूस करता है और अपने शब्दों को पिरोकर कागज पर उकेरता दिख जाता है जिसकी चिरकालीन दास्तां अंतहीन है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. रामधारी सिंह दिनकर परशुराम की प्रतीक्षा संस्करण 2016 लोक भारती प्रकाशन पृ–13.
2. सं दृरमणिका गुप्ता आदिवासी स्वर और नई शताब्दी वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण 2 008 पृ –47.
3. अनुज लुगुन बाघ और सुगना मुंडा की बेटी / kavitakosh-org
4. अनामिका मन माँझने की जरूरत सामयिक प्रकाशन, दिल्ली पृ–41.
5. वही पृ–121.
6. अरुण होता हिन्दी साहित्य विविध आयाम सं–सत्यप्रकाश तिवारी एस. पी. कम्यूनिकेशन प्रा0 लि कोलकाता पृ–15.

*****